नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक :05.09.2020

प्रकाशनार्थ

(डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित)

सांस्कृतिक विभाग और बी.एड्. विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रवक्ता **डॉ. कृष्ण कुमार** ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि शिक्षा और ज्ञान की अनन्त परम्परा भारतीय संस्कृति का मूल है। इस परम्परा का सर्वश्रेष्ठ निर्वहन हमें अपने प्रिय शिक्षक दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जीवन और दर्शन में मिलता है। यही कारण है कि भारत अपने इस प्रिय शिक्षक की जयंती 05 सितम्बर को बड़े गर्व के साथ 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाता है।

राधाकृष्णन जी की मान्यता थी कि अनादिकाल से लेकर आज तक सभ्यताओं के नित नए एप बदले है संस्कृतियों ने नित नयी करवटें ली हैं उसमें शिक्षा का वृहद और व्यापक योगदान निहित है। मानव को अधिक परिपक्व समझदार और प्रबुद्ध बनाने में शिक्षा की भूमिका प्रत्येक युग में प्रभावी रहेगी। दरअसल शिक्षा अपने अज्ञान की एक प्रगतिशील खोज ही है। ज्यों–ज्यों हम ज्ञान के इस अथाह सागर में डुबकी लगाते है इससे निकले अनुभव के मोती हमें इस बात का एहसास कराते कि अभी बहुत कम जाना है और अभी बहुत जानना बाकी है।

भारत की स्वतंत्रता पर अर्धरात्रि के अपने सम्बोधन में राधाकृष्णन जी ने जिस श्लोक का वाचन किया वह आज भी हमारी संस्कृति और शैक्षिक मूल्यों का प्राण है–

"सर्वभूता दिशामाल्यनम् सर्वभूतानि काव्यनी। समयश्यम् आत्मान्यानि स्वराज्यम् अभिगच्छति।।"

अर्थात स्वराज एक ऐसे सहनशील प्रकृति का विकास है जो अपने मानव भाइयों में ईश्वर का रूप देखता है। असहनशीलता हमारे विकास की सबसे बड़ी दुश्मन है। एक दूसरे के विचारों के प्रति सहनशीलता मात्र एक स्वीकार्य रास्ता है। ये उपर्युक्त पंक्तियां आज भी हमारे शैक्षिक दर्शन और संस्कृति के मूल प्राण है।

इसी क्रम में बी.एड्. विभाग की विभागाध्यक्षा **श्रीमती शिप्रा सिंह** ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने व्यक्तित्व से परिचय कराते हुए कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी द्वारा दिखाया गया मार्ग आज सभी शिक्षक और छात्रों के लिए आदर्श स्वरूप है जिसे आत्मसात कर शिक्षक और छात्र अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते है उन्होंने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के विचार से सबको अवगत कराया कि हमें मानवता की उन नैतिक जड़ों को जरूर याद करना चाहिए जिससे अच्छी व्यवस्था और स्वतंत्रता दोनों बनी रहे। कार्यक्रम के अंतिम कड़ी में **सांस्कृतिक विभाग की प्रभारी एवं इस कार्यक्रम की संयोजक सुश्री दीप्ति गुप्ता** ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सांस्कृतिक विभाग द्वारा आयोजित आनलाइन कार्यक्रम एक नया प्रयोग था जो सफल रहा और आगे भी इस तरह के कार्यक्रम के द्वारा नवीन प्रयोग होते रहेंगे।

बी.एड्. विभाग के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये जिसमें ऐश्वर्या, हर्षा गुप्ता, प्रदीप शुक्ला, श्वेता, अंशिका, शशि हिमामी, सरफराज, विजय आदि शामिल थे। कार्यक्रम में बी.एड्. विभाग के अध्यापक व अध्यापिका श्रीमती विभा सिंह, श्रीमती अनुभा श्रीवास्तव, श्रीमती पुष्पा निषाद, सुश्री श्वेता चौबे, श्रीमती साधना सिंह, श्री नवनीत सिंह तथा श्री शैलेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मानवेन्द्र पति त्रिपाठी एवं सुमित ने किया। इस कार्यक्रम के द्वारा डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को पूरा महाविद्यालय परिवार हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

Dipti Gupta

(सुश्री दीप्ति गुप्ता)
सांस्कृतिक विभाग, प्रभारी